ORIGINAL RESEARCH PAPER

Political Science

भारत के युवा आइकन: स्वामी विवेकानंद का युवा वर्ग को संदेश

KEY WORDS: अद्वैत, वेदान्त, राष्ट्रीयता, युवा पीढ़ी।

Baby Tabassum Department of Political Science, University of Delhi, Delhi - 110007.

ABSTRACT

एक युवक, जो आनेवाले समय में सदैव युवाओं का आदर्श बना रहेगा। वह आह्वान करने वाला शाश्वत युवक और कोई नहीं, वही राष्ट्रभक्त हिन्दू सन्यासी, स्वामी विवेकानंद थे। उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में इस शोध प्रबंध का प्रथम भाग भारत की अध्यात्मिक और सांस्कृति का वैश्विक चिंतन में अमूल्य योगदान को दृष्टिगोचित करता है। द्वितीय भाग स्वामी विवेकानंद का युवा वर्ग को दिए गए संदेश की चर्चा करता है तृतीय भाग युवा शक्ति- युवाओं के लिए आयाम का विश्लेषण प्रदान करता है।

भूमिका

स्वामी विवेकानंद (१८६३-१९०२) अद्वैत वेदान्त के महान प्रतिपादक थे। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् १८९३ में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। उन्होंने रामकृष्णन मिशन की स्थापना थी। विवेकानंद ने पश्चिमी देशों के प्रवास की शुरुआत के समय १८९३ में धर्म संसद में अपने विश्वस्तुत्य सम्बोधन से मातृभूमि के खोये हुए आत्मसम्मान, गौरव और ध्येय को पुन: प्रतिष्ठित किया वापस लौटने पर उन्होंने भारत से आह्वान किया- 'उठो । जागो । और लक्ष्य प्राप्ति तक रुको मत। यह पहला वैचारिक आंदोलन था। स्वामी विवेकानंद के जीवन और संदेशों से प्रेरित दूसरा वैचारिक आंदोलन १९६३ में प्रकट हुआ, जब पूरे देश ने उत्साहपूर्वक उनकी जन्मशताब्दी मनाई। शताब्दी समारोह की प्रखर चेतना में संपूर्ण राष्ट्र कन्याकुमारी के तट पर समुद्र में स्थित शिला पर भव्य विवेकानंद शिला स्मारक को मूर्तरूप देने के लिए एकजुट हुआ। १९८५ से हर साल भारत सरकार १२ जनवरी को स्वामी विवेकानंद की जयंती को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाती है। भारत सरकार के संचार से उद्धृत करते हुए, "यह महसूस किया गया कि स्वामीजी का दर्शन और वे आदर्श जिनके लिए उन्होंने जीवन जिया और काम किया, भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत हो सकते हैं।"

विश्व चिंतन में विवेकानंद का योगदान

आधुनिक भारत के निर्माताओं में स्वामी विवेकानंद का स्थान गौरवपूर्ण है। स्वामी विवेकानंद के शिकागो में विश्व धर्म सम्मलेन को संबोधित करने के १२५ वर्ष पूरे होने के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि विवेकानंद कहते थे जनसेवा ही प्रभुसेवा है। उस समय के समाज की कल्पना कीजिए जब पूजा –पाठ और परंपराओं की समाज में पैठ थी। ऐसे समय में ३० साल का नौजवान कह दे कि मंदिर में बैठने से भगवान नहीं मिलने वाला, समाज सेवा करने से भगवान मिलेगा। स्वामी जी का राष्ट्र के गौरव और स्वाभिमान में अडिग विश्वास था। उनके अनुसार देश के प्रति प्रेम, कर्तव्य, समाजसेवा और समर्पण की भावना ही 'राष्ट्रीयता' है। उनका युवाओं को प्रथम संदेश ही यही था –**"उत्तिष्ठित जागृत प्राप्य वरानिबोधत"। अर्थात् " उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक तुम अपने लक्ष्य की प्राप्ति न कर लो "।**

आप सभी उनके शिकागो विश्व धर्म सम्मलेन (१८९३) से तो परिचित होंगें। यहाँ उन्होंने अपना पहला भाषण दिया जब उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा कि **'भाइयो और बहनों'** तो तालियों की गड़गड़ाहट मानो रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। तो यह जानकर मेरे मन में ख्याल आया कि उनके व्यक्तित्व में कुछ तो ऐसी बात होगी जिसने अमरीका जैसे देश के लोगो तक को अपने भाषणों से मंत्रमुग्ध कर लिया। उनका ये व्याख्यान भारतीय अस्मिता और आत्मविश्वास का प्रतिनिधि बन गया। सर्वप्रथम मैं यह बताना चाहूंगी कि उनका व्यक्तित्व कैसा था ? उनका व्यक्तित्व था – मनीषी , वेदांती (मानवता को ही ब्रहम की अभिव्यक्ति के रूप में देखना), मानवीय भावना से ओत-प्रोत, सदैव सही पथ पर चलने वाला,नैतिक उत्थान की विरासत थे –विवेकानंद जी।

स्वामी जी धर्म को एक प्रबल शक्ति मानते थे। धर्म ऐसा जो हमें मनुष्य बना सके। धर्म का अर्थ है- अच्छे कर्म करना , मानवता की सेवा करना। शास्त्रों में कहा गया है कि " **जो मानवता की सेवा करते हैं वो ही भगवान के सबसे बड़े सेवक है।**" आज हम कर्म में पिछड़े क्यों हैं ? क्योंकि हमें शुरुआत से ही यह सिखाया जाता है कि जो मिला है उसे अपना भाग्य समझकर स्वीकार कर लो पर हम ये क्यों भूल जाते हैं कि अच्छे कर्म व कड़ी लगन से तो भाग्य को भी बदला जा सकता है।

भारतीय समाज , विशेषकर युवा पीढ़ी आज एक बहुत बड़े भटकाव और निराशा से गुज़र रही है। श्रम आधारित काम को हेय दृष्टि से देखने और बिना मेहनत के रातों-रात पूंजीपति बनने की संस्कृति देश में तेज़ी से फ़ैल रही है और इन सबकी चपेट में सबसे ज्यादा युवा वर्ग ही है। ऐसे में विवेकानंद जी ने ब्रिटिश साम्राज्वाद के दौर में भारतीय युवाओं में मानवीय मूल्यों पर आधारित सामाजिक विकास और राष्ट्रीयवाद की भावना का संचार कर इस देश को जो दिशा दी थी , वही आज के समय में इस देश और युवाओं के लिए उतनी ही प्रासंगिक एवं जरूरी है।

विवेकानंद के युवा वर्ग पर विचार

स्वामी जी युवा शक्ति को राष्ट्र का प्राणतत्व मानते थे। वे नवयुवको को **बलशाली, आत्मविश्वासी , दृढ़निश्चयी** बनने का संदेश देते हैं, ताकि वे गंभीर से गंभीर चुनौतियों का सामना कर सकें। **" प्राचीन धर्म कहता है नास्तिक वो है जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता जबकि नया धर्म कहता है नास्तिक तो वो है जो स्वयं में विश्वास नहीं करता |"** खुद पर विश्वास करना बेहद जरूरी है। क्योंकि उनका मानना था कि अगर हममें आत्मविश्वास ,सच्चाई ,लगन और निष्ठा है , तब तक प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति मिलेगी और ब्रहमांड में ऐसी कोई ताकत नहीं जो हमारा बाल भी बांका कर सके। इस धरती पर कोई भी काम मुश्किल तो हो सकता है पर नामुमकिन नहीं बस हमें लगातार कोशिश करते रहना चाहिए।

स्वामी जी का प्रत्येक शब्द युवा पीढ़ी के लिए ध्वनित् हुआ है। युवा पीढ़ी के लिए उनका स्नेह और विश्वास ही नवयुवाओं के लिए प्रेरक शक्ति का कार्य करता है। नवयुवकों पर उनकी बातों का प्रभाव विद्युत तरंगो के समान पड़ता था। आज जब कोई युवक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु परिश्रम करता है और यदि उसके हाथ असफलता लगती है तो वह टूट-सा जाता है, हताशा के अंधकार में डूबता चला जाता हैं। ऐसे में या तो वह आत्महत्या का निर्णय ले लेता है अथवा फिर समझौतावादी बन जाता है। किन्तु हमें **सूर्यकांत निराला जी** की उक्त पंक्तियों को नहीं भूलना चाहिए और इसे अपना प्रेरणा स्रोत बनाकर सदैव आगे बढ़ते रहने की सोचना चाहिए।

"असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो |
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करों ||
जब तक ना हो सफल, नींद-चैन को त्यागो तुम |
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम ||
कुछ किये बिना ही जय-जयकार नहीं होती |
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ||"

युवकों के लिए स्वामी जी ने आशावादी तथा संघर्ष के स्वरों में एक मधुर गीत के समान कुछ पंक्तियाँ अपने भाषण में इस प्रकार कही –

" असफलता तो जीवन का सौन्दर्य है, यदि तुम हज़ार बार भी असफल हो तो |
एक बार फिर प्रयास करों, बार-बार प्रयास करो ||
लाखो तूफान आये लेकिन, आज तक तेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ पाए |
इसलिए तू प्रयास करते चल, तू प्रयास करते चल ||
सफलता तेरे कदम चूमेंगी, आज नहीं तो कल- आज नहीं तो कल|"

युवकों के प्रति अपनी इस वाणी से घोर निराशा के अंधकार में भी आशा की किरण के साथ वह उन्हें जीवन संग्राम में डटकर संघर्ष करने की ओर प्रेरित करते रहे।

मानव जीवन का संग्राम एक ऐसा युद्ध है जो हथियार से नहीं जीता जा सकता। वह तो मनुष्य के भीतर छुपी शक्ति को प्रकट करके ही जीता जा सकता है। इसलिए तो स्वामी जी सिंह गर्जन करते हुए कहते है कि **"यह ध्रुव सत्य है कि शक्ति ही जीवन है , दुर्बलता ही मृत्यु है।"** दुर्बल व्यक्ति के लिए न तो इस जगत में और ना ही किसी दूसरे लोक में कोई स्थान है। दुर्बलता हमें गुलामी की ओर ले जाती है और दुर्बलता ही शारीरिक व मानसिक रूप से निरंतर तनाव का कारण है। इसलिए भारत को दुर्बलों एवं कायरों की आवश्यकता है जिनके स्नायु लोहे के बने हो और मांसपेशियाँ फौलाद की बनी हो तथा जिनकी दृष्टी लोभ और स्वार्थ की सीमाओं से बाहर हो।

वह दिव्य वाणी से युवाओं की चेतना को जागृत करते थे कि ध्यान रहे जब मनुष्य के भीतर शक्ति का संचार होता है, तो वह अपनी सभी असफलताओं को सफलता में परिवर्तित कर लेता है। स्वामी जी ने नवयुवकों को अपने जीवन का मूलमंत्र बताते हुए कहा कि **'प्रयास करते रहो'** यदि तुम्हें अपनें चारो ओर अंधकार ही अंधकार दिखाई दे तो भी प्रयास करते रहो किसी भी परिस्तिथियों में हारों मत, बस प्रयास करते रहो अंत में जीत तुम्हारी ही होगी।

स्वामी जी प्रत्येक युवा को आत्मनिर्भर बनते देखना चाहते थे क्योंकि जब यहाँ के नागरिक आत्मनिर्भर बनेंगे तभी तो राष्ट्र आत्मनिर्भर बनेगा। पाश्चात्य का चश्मा उतार कर तो देखो- ये भारत भूमि स्वर्ग से भी महान है। अपनी मिट्टी की ख़ुशबू को पहचानो अपने अन्दर की सोई आत्मा को जगाओ , अपने देश की समस्याओं पर थोड़ा-सा तो चिंतन करो क्योंकि – **"देश हमें देता है सब कुछ ,हम भी तो कुछ देना सीखे"|**

पीएम मोदी ने अपने भाषण(११ सितम्बर२०१७) में आगे कहा क्या हम महिलाओं का सम्मान करते हैं ? क्या लडकियों के प्रति आदर भाव से देखते हैं, जो देखते हैं उन्हें मैं सौ बार नमन करता हूँ। वह सिर्फ उपदेश देने वाले नहीं थे, उन्होंने विचार को भी जमीन पर भी उतारा। रामकृष्ण मिशन का जिस भाव से जन्म हुआ आज इतने सालों बाद भी यह आन्दोलन उसी भाव से चल रहा है। स्वामी जी के अनुसार हमारा राष्ट्रीय महापाप है , महिलाओं और दलितों का अनादर करना। वे दलितों का भी उद्धार चाहते थे। वेदों में कहा गया है –**" यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"|** अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है ,वहीं देवता वास करते हैं। विवेकानंद जी का मानना है कि जिस जाति, जिस देश में स्त्रियों सम्मान व आदर नहीं होता। वह देश , वह जाति न कभी बड़ी बन सकी है और न ही कभी बड़ी बन सकेगी।

स्वामी जी के अनुसार राष्ट्र का उत्थान तभी होगा जब आध्यात्मिकता को अपनाया जाएगा। जहाँ के नागरिक जागरूक और शिक्षित हों और शिक्षा ऐसी हो जो चरित्र का निर्माण करें, बुद्धि का विकास करें और मानवता का पाठ पढ़ायें। क्योंकि आज के युग में नैतिकता और संस्कारों की शुचिता का मानो पतन ही हो गया है।

मुझे पता है आप सबके मन में यह ख्याल आ रहा होगा **क्या आज के युग में ऐसे युवा मौजूद हैं, जिन्हें स्वामी जी तलाश रहे है ? उत्तर है – हाँ**

जिनको स्वामी जी तलाश रहे थे वो हम ही हैं। अपने हक़ के लिए लड़ना हमें आज भी आता है। आज भी देश की रक्षा के लिए सीमापार सैकड़ों नौजवान अपने प्राण न्योछावर करने से कदापि नहीं कतराते हैं। हर काम को करने का जज़्बा और जोश आज भी हममें मौजूद है। आज के युवाओं में दृढ़निश्चयता, विनम्रता और आत्मविश्वास की खासा कमी नहीं है। माना कि आज हम विलासिता और भौतिकवाद के आवरण से ढक गए हैं पर हम अपने संस्कारों और मूल्यों को कदापि नहीं भूले हैं। आज भी हम छोटो को प्यार और बड़ो को सम्मान देते है।

युवा शक्ति – युवाओं के लिए आयाम

विशाल युवा शक्ति को जागृत कर सही दिशा देने के लिए जरूरत है- सेवा, स्वाध्याय, सुरक्षा और स्वावलंबन। यह वह ध्वनि है जिसने राष्ट्र को घोर निद्रा से जगाया। मेरा विश्वास नई पीढ़ी में है, आधुनिक पीढ़ी में है, उनमें से ही कार्यकर्ता मिलेंगे। वे सिंहों की तरह सारी समस्याओं का हल निकल लेंगे। इस काम को करने के लिए आने वाले युवाओं के निमित्त उन्होंने तीन आवश्यकता निर्धारित की –

i. हृदय से अनुभव करो।
ii. उपाय को जानो।
iii. पवित्र उद्देश्य व अदम्य इच्छाशक्ति रखो।

स्वामी विवेकान्द का आह्वान इतना शक्तिशाली था कि भारतीय मन में अन्दर तक प्रविष्ट हो गया और शताब्दियों से जमी हुई धूल को झकझोर कर हटा दिया। उसी के परिणामस्वरूप अनेक आंदोलन, सेवा-कार्यों का अगली शताब्दी में उदय हुआ। कोलम्बों से अल्मोड़ा की यात्रा में उनके द्वारा दिए गए संदेश राष्ट्रीय कार्य के लिए सदा के लिए प्रेरणादायी बन गए।[5]

उपसंहार :

यह सुनिश्चित है कि स्वामी जी के विचारों को अपनाकर आज भी उन्हें पाया जा सकता है। वह अपने विचारों के रूप में उपस्थित रहकर आज भी देश के युवाओं को प्रेरित, परिवर्तित करने के लिए व्याकुल है। बस जरूरत है तो स्वामी जी के विचारों को जीवन में उतारने की। उन्होंने देशवासियों और युवाओं को आत्मविश्वास, निडरता और कर्म की जो प्रेरणा दी। वह भारतीय राष्ट्रवाद को जगाने और आगे बढाने में बड़ी सहायक सिद्ध हुई है।

REFERENCES:

1. https://vedantasociety.net/vivekananda.
2. वर्मा, वी. पी. (2017). आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन. आगरा: नवरंग ऑफसेट प्रिंटर्स. पृष्ठ-177.
3. https://pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=114503.
4. https://prakashan.vrmvk.org/swami-vivekananda-sardh-shati-samaroh/swami-vivekananda-ka-jivan-aur-sandesh.html.
5. भिडे, कुमारी निवेदिता. स्वामी विवेकानंद का जीवन और संदेश: जागृत भारत के भविष्य दृष्टा. पृष्ठ-40-41. see https://books.google.co.in/books?id=YD67CwAAQBAJ&printsec=frontcover&source=gbs_ge_summary_r&cad=0#v=onepage&q&f=false.